पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट: पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट सबसे प्रमुख थे। राष्ट्रकूट साम्राज्य सबसे लंबे समय तक चला और अपने समय का सबसे शक्तिशाली भी था। पाल वंश की स्थापना 750 ईस्वी में गोपाल ने की थी, जो पहले एक सरदार था लेकिन बाद में बंगाल का राजा बना।

यहां, हम 'पलास, प्रतिहार, राष्ट्रकूट' की पूरी अध्ययन सामग्री दे रहे हैं जो बीपीएससी और अन्य राज्य स्तरीय परीक्षाओं जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं को क्रैक करने के लिए उम्मीदवारों की यात्रा को आसान बनाएगी।

पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट

पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों का त्रिपक्षीय संघर्ष

इन साम्राज्यों के मध्य कन्नौज के नियंत्रण को लेकर एक प्रमुख संघर्ष था जो गंगा के उपरी उपजाऊ मैदानों पर उनके नियंत्रण का कारण बना।

पाल (Palas)

- इन्होने पूर्वी भारत पर अपना प्रभुत्व जमाया।
- इसकी स्थापना राजा गोपाल ने 750 ईसवीं में की और बाद में इनका स्थान धर्मपाल ने ले लिया। पाल शासक उत्तर में प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों द्वारा पराजित हुए।
- ये बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। धर्मपाल ने नालंदा विश्वविद्यालय के विस्तार के लिए 200 गांवों को मिलाकर उसका जीर्णोद्धार कराया। इन्होने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की भी स्थापना की और बौद्ध भिक्षुओं के लिए कई विहार भी बनवाए।
- उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित किये। शैलेन्द्र वंश ने कई राजदूतों को भेजा और नालंदा के निकट मठ की स्थापना के लिए स्वीकृति भी मांगी।

प्रतिहार (Pratiharas)

- इन्होने पश्चिमी भारत और ऊपरी गंगा घाटी पर प्रभुत्व जमाया।
- वास्तविक संस्थापक और प्रमुख शासक राजा भोज थे जिन्होने आदि वाराह की भी उपाधि ग्रहण की थी।
- एक बगदादी यात्री, अल-मसूदी, ने प्रतिहारों के समय में 915-916 ईसवी के मध्य भारत की यात्रा की थी।
- संस्कृत के महाकवि और नाटककार राजशेखर महिपाल के दरबार में थे।
- राष्ट्रकूट शासकों इंद्र III और कृष्ण III के आक्रमणों के कारण प्रतिहार शासन का तेजी से विघटन हुआ।

राष्ट्रकूट (Rashtrakutas)

- इन्होंने दक्कन और उत्तर एवं दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों पर शासन किया। राज्य की स्थापना दंति दुर्ग ने की और इसने मालखेड़ को अपनी राजधानी बनाया।
- इस वंश के महान शासक अमोघवर्ष था। इसे कन्नड़ भाषा में प्रथम काव्य पुस्तक की रचना का श्रेय दिया जाता है। उसने राजधानी मान्यखेत का भी निर्माण कराया।
- इनका पल्लवों, चोलों और दक्षिण में चालुक्यों के साथ निरंतर संघर्ष जारी था।
- कृष्ण प्रथम में ऐलोरा में चट्टानों को काटकर शिव का मंदिर बनाया।
- इनकी सहिष्णु धार्मिक नीति के कारण विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई।

राजनैतिक विचार और संगठन

- राजा प्रशासन का केन्द्र बिंदु था और उसका पद वंशानुगत था।
- राजमहल – अनंतपुर
- पालों और प्रतिहारों की शासनव्यवस्था

1. भुक्ति – उपारिक के अधीन प्रांत
2. मंडल या वैश्य – विषयपति के अधीन जिले
3. ग्राम समूह – सामंत या भोजपति
4. पट्टल – छोटी इकाई

- राष्ट्रकूटों में प्रशासन

1. राष्ट्र – राष्ट्रपति के अधीन प्रांत
2. विषय – जिला
3. भुक्ति – छोटी इकाई

- ग्राम – महाजन – गांव का प्रधान
- कोतवाल – नियम और कानून बनाए रखने की जिम्मेदारी
- नाड-गौवनाड/देसा-ग्रामाकूट – दक्कन में वंशानुगत राजस्व अधिकारी

चोल (Cholas) साम्राज्य

- 9 वीं शताब्दी में उदय हुए चोल साम्राज्य के नियंत्रण में प्रायद्वीप भारत का सबसे बड़ा भाग था। मजबूत नौसेना के साथ, इन्होने श्रीलंका, मालदीव पर विजयी पायी और विदेशी व्यापार संबंध मजबूत किए।
- साम्राज्य की स्थापना पल्लवों के एक जागीरदार, विजयालय द्वारा 850 ईसवीं में की गई।

BYJU'S EXAM PREP
SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

- राजराज (985-1014 ईसवीं) और राजेन्द्र प्रथम (1014-1044 ईसवीं) महान चोल राजा थे। इन्होंने राज्यारोहण की नीति अपनाई जिसमें दक्षिण-पूर्व एशिया देशों के साथ समृद्ध व्यापार पर नियंत्रण के लिए श्रीलंका, मालदीव, पाण्डय और चेर राज्यों का विलय शामिल है।
- राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण 1010 ईसवीं में तंजौर में हुआ था।
- राजेन्द्र-I ने गंगैकोंडचोल (गंगा के चोल विजेता) की उपाधि धारण की और कावेरी नदी के तट पर नई राजधानी 'गंगैकोंडचोलपुरम' स्थापित की।
- राजेन्द्र-I ने इंडो-चीन के श्री विजय साम्राज्य के खिलाफ एक नौसेना अभियान भी किया।
- शैलेन्द्र वंश के शासक ने नागापट्नम में एक बौद्ध मठ का निर्माण किया था।
- चोल की मजबूत नौसेना ने बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील' में रूपांतरित किया।
- चोलों ने अपने प्रशासन में गांवों में स्थानीय स्व-शासन को बढ़ावा दिया।

चोल सरकार

- राजा अपने राज्य के प्रशासन का वहन मंत्री परिषद् की सलाह पर करता था।
- चोल प्रशासन

1. मंडल – प्रांत
2. वलनाडु – लघु प्रांत
3. नाडु – जिला
4. कुर्रम – गांवों का समूह

- आधारभूत निर्माण: राजमार्ग बनाए गए, सिंचाई परियोजनाऐं शुरू हुईं
- ग्राम सभाएं: उर – गांव की मुख्य सभा, महासभा – ब्राहमण गांव जिन्हें अग्रहार कहा जाता था, में व्यस्क पुरुषों का सम्मेलन

सांस्कृतिक जीवन

- ये शहरों (तंजौर, गंगैकोंडचोलपुरम), बड़े दावत खानों, बड़े बागों और छतों आदि के महान निर्माता थे।
- मंदिर वास्तुकला की द्रविड शैली अपने चरम पर थी। इनके मंदिर एक छोटे शहर की भांति विस्तृत थे और इनके विस्तार के लिए कर मुक्त भुमि प्राप्त होती थी।
- कांची में कैलाशनाथ मंदिर, तंजौर में बृहदीश्वर मंदिर द्रविड वास्तुकला के उदाहरण हैं।
- चोलों के पतन के पश्चात, होयसलों ने हेलेविड (होयसलेश्वर मंदिर जोकि चालुक्य वास्तुकला का एक उदाहरण है) में मंदिर बनाकर, मंदिर बनाने की परंपरा को जारी रखा ।
- श्रवणबेलगोला में गोमेत्श्वर की मूर्ति और कांसे की नटराज प्रतिमा के साथ मूर्तिकला अपने चरम पर थी।
- संस्कृत साहित्य के साथ ही, क्षेत्र में स्थानीय भाषा साहित्य का भी उदय हुआ।

BYJU'S EXAM PREP

SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

- 6 वीं से 9 वीं शताब्दी के मध्य अलवड़ और नारायण ने भक्ति आंदोलन की शुरूआत की। इनकी रचना 'त्रिमुराई' को पांचवा वेद माना जाता है। कंबन की रामायण को भी तमिल साहित्य की एक उत्कर्ष रचना माना जाता है।
- पम्पा, पोन्न और रन्ना को कन्नड़ काव्य का त्रिरत्न माना जाता है।
- इस प्रकार, इस काल में व्यापार और वाणिज्य समृद्ध स्तिथि में था तथा मंदिर निर्माण जैसे महान कार्यों के साथ साथ अदभुत साहित्यिक रचनाऐं भी हुई।

byjusexamprep.com